28 अप्रैल 1989

साहित्य अकादेमी

इंडिया इंटरनेशनल सेंटर

लेखक से भेंट

अमृतराय

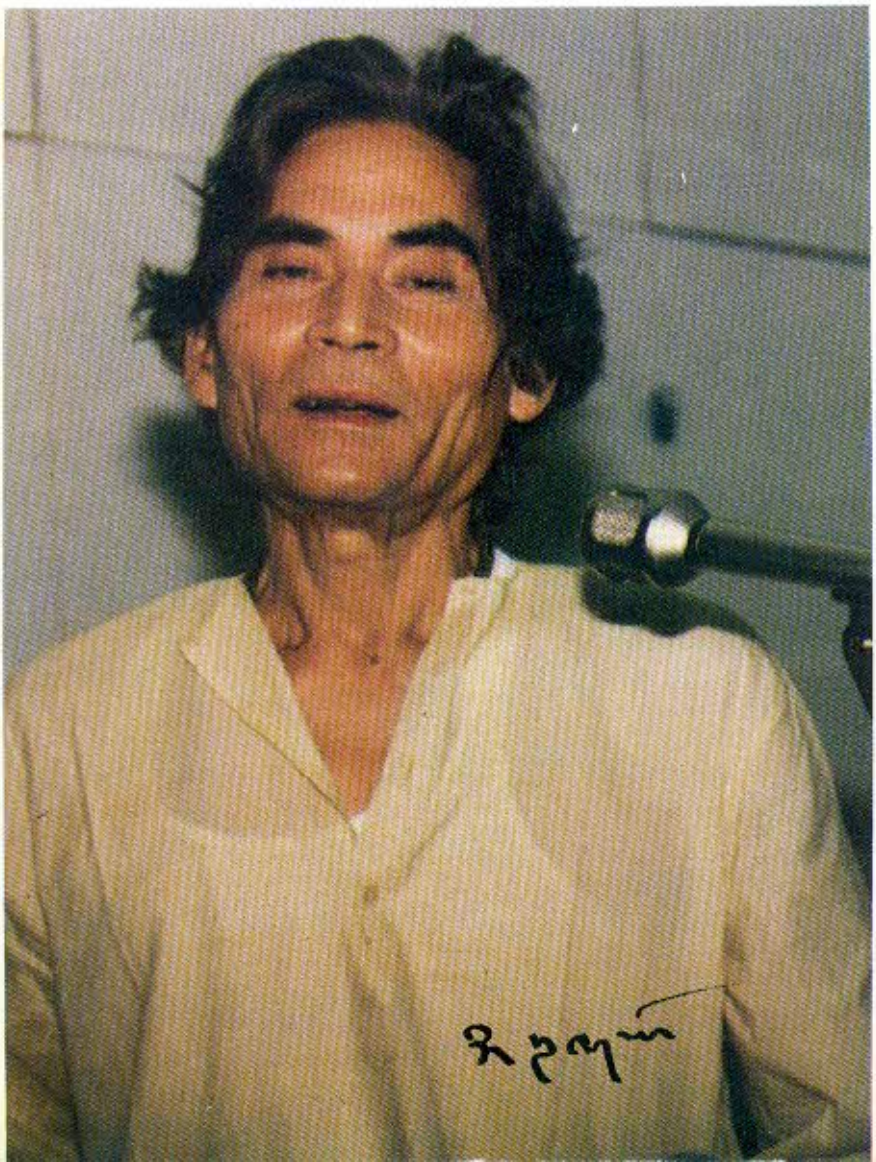

राधाकृष्णन् से साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त करते हुए,
नयी दिल्ली, 1964

अमृतराय ने विपुल मात्रा में लेखन किया है। सात उपन्यास, आठ कहानी-संकलन, तीन नाटक, हास्य-व्यंग्य और साहित्यिक समालोचना की पाँच-पाँच पुस्तकों, एक जीवनी और एक यात्रा-वृत्त की रचना के साथ आठ पुस्तकों के अनुवाद, एक प्रतिष्ठित हिन्दी पत्रिका का दस वर्षों तक सम्पादन तथा अनुसन्धान-कार्य निश्चय ही उनकी उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हैं।

अमृतराय द्वारा लिखित 640 पृष्ठों की अपने पिता प्रेमचन्द की जीवनी *क़लम का सिपाही* का आज भी कोई मुक़ाबला नहीं। इसे अपनी साक्ष्य-समृद्धि, सहज ईमानदारी, अभिव्यक्ति क्षमता और प्रेरक शैली के नाते प्रकाशन के वर्ष भर के भीतर ही साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। भीष्म साहनी का कथन है कि "जैसे-जैसे हम क़िताब के पन्नों से गुज़रते हैं, लेखक के वैयक्तिक जीवन के उतार-चढ़ाव तथा संघर्षों और सामाजिक-राजनीतिक धाराओं तथा प्रतिधाराओं के जरिए जो उसके देश का भाग्य-निर्धारण कर रहे थे और जिससे वह गहरे जुड़े हुए थे, उनका विकास देख सकते हैं।"

अमृतराय के प्रथम उपन्यास *बीज* (1952) में आज़ादी के कुछ वर्षों पहले और बाद की कथा है। इसके अनेकानेक पात्रों ने इसे एक व्यापक फलक प्रदान किया है। लेखक ने दिखाया है कि आज़ादी मिलने के बाद भी लोगों के दृष्टिकोण में कोई विशेष अन्तर नहीं आ पाया है। दलितों पर अत्याचार जारी है। अमीर-ग़रीब के बीच की खाई और चौड़ी हुई है। उपन्यास में लेखक ने एक वर्गहीन समाज की स्थापना में अपना विश्वास प्रकट किया है। भदन्त आनन्द कौशल्यायन ने इसकी तुलना गोर्की के *मदर* से की है। प्रकाशचन्द्र गुप्त का मानना है कि *बीज* ने "अमृतराय को अनायास ही पाँचवे दशक के जीवित उपन्यासकारों की प्रथम पंक्ति में ला खड़ा किया।"

नागफनी का देश (1953) में वैवाहिक सम्बन्ध और प्रेम-त्रिकोण का चित्रण करने के पश्चात, *हाथी के दाँत* (1956) में अमृतराय पुनः सामाजिक और राजनीतिक चेतना की संश्लिष्ट भूमि की तरफ़ लौटते हैं। स्वतन्त्रता-प्राप्ति से पहले जो ज़मींदार अंग्रेज़ों की खुशामद और किसानों तथा मज़दूरों पर अत्याचार करते थे, आज़ादी मिलने पर वे ही खादी पहनकर नेता बन गये। देश की ग़रीब फटेहाल जनता और उनकी समस्याओं से उनका कुछ लेना-देना नहीं रहा। राजनेताओं के भ्रष्टाचार, पत्रकारों की गुटबाज़ी, पूँजीपतियों की हृदयहीनता, मज़दूरों की दुर्दशा, अर्थतन्त्र की असफलता का यथार्थवादी

चित्रण अत्यन्त प्रभावी तथा तीखा है लेकिन लेखक ने कहीं भी सिद्धान्त बघारने की कोशिश नहीं की है। राहुल सांकृत्यायन इसे "एक कलाकृति और हमारे सामाजिक जीवन के विकृत रूपाकार का यथार्थ चित्रण" मानते हैं।

तेरह वर्षों के अन्तराल के पश्चात 1969 में अमृतराय के तीन उपन्यास प्रकाशित हुए। *सुख दुःख*, व्यक्तिगत क्षति की करुण-कथा है। इसमें एक दिवंगत युवा पुत्र की स्मृतियाँ हैं जहाँ अतीत और वर्तमान आपस में घुल-मिल गये हैं। अपनी सच्चाई और तात्कालिकता के नाते यह उपन्यास उल्लेखनीय है, क्योंकि तीन वर्ष पहले ही अमृतराय का अपना अठारह वर्षीय पुत्र रक्त कैंसर के कारण काल-कवलित हो गया था।

भटियाली में अमृतराय पुनः प्रेम त्रिकोण का तरफ़ लौटते हैं और *जंगल* में उनकी सामाजिक चिन्ता परिलक्षित होती है। *जंगल* उस समाज की तस्वीर है, जहाँ जंगल के ही नियम-क़ानून लागू होते हैं। यहाँ हर आदमी किसी दरिन्दे की भाँति अपने स्वार्थ-साधन में, अपनी ही क्षुधा-पूर्ति में जुटा हुआ है। फिल्म जगत की ज़िन्दगी, समृद्धि, दरिद्रता, शराब, औरत, मुक्त यौन-सम्बन्ध और सभी

बुखारेस्ट के निकट एक संरक्षित गाँव में, रूमानिया, 1971

जिगरी दोस्त भगवतीशरण सिंह के साथ मनाली 1981

मानवीय मूल्यों का ढह जाना—पाठक को कहीं गहरे आन्दोलित करते हैं।

आठ वर्षों बाद अमृतराय का वृहदाकार उपन्यास *धुआँ*, (1977) प्रकाशित हुआ। विशाल कलेवर, असंख्य पात्र, सैद्धान्तिक बहसें और व्यावहारिक समस्याएँ पाठक को जकड़ लेती हैं। ट्रक ड्राइवर, क्लीनर, क्रान्तिकारी मध्यवर्ग, युवा, आदर्शवादी, आशावादी या झक्की और अन्य विविध चरित्र समाज का आईना हैं। लेकिन उपन्यासकार यहाँ समस्या का कोई सुनिश्चित हल नहीं प्रस्तुत करता, जैसा कि उसने अपने प्रथम उपन्यास *बीज* में किया है।

उनकी कहानियों में भी सामाजिक और मनोवैज्ञानिक विषयों—भूख, ग़रीबी, भ्रम और यथार्थ के बीच के द्वन्द्व, कथनी और करनी के बीच के फ़र्क़ और मानवीय दुर्बलताओं तथा विकृतियों का चित्रण है। वह अपने सबसे प्रभावी चरित्र मुख्यतः मध्यवर्ग से ही लेते हैं।

अमृतराय अपने सहज हास्य और मधुर व्यंग्यों के लिए याद किये जाते हैं। सामान्यतः वह खुद को ही अपने व्यंग्यों का निशाना बनाते हैं और इसीलिए दूसरों पर किये गये उनके व्यंग्य सहनीय हो जाते हैं।

उनकी आलोचना एक सर्जक कलाकार की आलोचना है और वह सैद्धान्तिक या व्यावसायिक न होकर व्यावहारिक है। यह एक ऐसे सृजनशील लेखक और सम्पादक की आलोचना है जो सामाजिक विषमताओं को लेकर चिन्तित है। उनका विश्वास है कि

समाज लेखक को प्रभावित करता है और बदले में लेखक भी समाज को प्रभावित करता है। वह एक मार्क्सवादी आलोचक के रूप में सामने आते है, लेकिन मार्क्सवाद उनके लिए एक खुला और गतिशील दर्शन है, जड़, स्थिर अथवा रूढ़ नहीं। वह प्राचीन भारतीय परम्परा से उपयोगी तत्त्वों को लेना चाहते हैं, पर पूरे विवेक और परीक्षण के बाद, न कि आँखें मूँदकर। मार्क्सवाद उनके लिए कोई बन्धन नहीं है बल्कि एक मुक्त प्रगतिशील प्रक्रिया है। उनका विचार है कि कोई भी दर्शन जीवन से बड़ा नहीं और आलोचक के लिए यह समझना और भी ज़रूरी है, अन्यथा उसकी आलोचना एकांगी होगी अथवा पक्षपातपूर्ण। वह उन विरल मार्क्सवादी आलोचकों में से एक हैं, जिन्होंने बोरिस पास्तरनाक के विवादास्पद उपन्यास को नोबेल पुरस्कार प्रदान किये जाने पर लेखक की स्वाधीनता के प्रश्न को उठाया था। एक उपन्यास के रूप में *डा. जिवागो* की आलोचना करते हुए उन्होंने उसके अनैतिहासिक और अयथार्थवादी दृष्टिकोण पर उँगली उठायी, लेकिन पास्तरनाक की सशक्त भाषा, वर्णन-क्षमता, दृढ़निष्ठा और व्यक्ति के अत्यधिक समाजीकरण के प्रति प्रतिवाद के साहस और देशभक्ति की उन्होंने प्रशंसा की है कि उसने अपने देश के बाहर जाकर यह बात नहीं कही और न उसको कहने के बाद अपना देश छोड़ा।

अमृतराय ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर, शेक्सपीयर, ब्रेख्ट, जूलियस फूचिक, आस्त्रोवस्की और

सज्जाद ज़हीर, रज़िया आपा और कन्नाक
लेखकों के साथ, आमा आता

उपराष्ट्रपति शंकरदयाल शर्मा से भारतीय
अनुवाद परिषद सम्मान प्राप्त करते हुए
नयी दिल्ली, 1989

हावर्ड फ़ास्ट की कृतियों को हिन्दी में अनूदित किया है।

नेहरू फ़ेलोशिप प्राप्त कर उन्होंने हिन्दी/हिन्दवी के उद्भव और विकास पर शोधग्रन्थ *ए हाउस डिवाइडेड* लिखा। भाषा-विभाजन के अप्राकृतिक व्यापार को वह कभी स्वीकार नहीं करते।

अमृतराय ने *हंस* पत्रिका का दस वर्षों तक सम्पादन किया और बराबर नयी प्रतिभाओं को उभरने का मौक़ा देते रहे। अनेक लेखकों की पहली रचना इसी में प्रकाशित हुई। उन्होंने प्रेमचंद की ढेर सारी अप्रकाशित रचनाओं का पुरानी फ़ाइलों और गोदामों से उद्धार कराया और उन्हें कई खण्डों में प्रकाशित किया।

पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी ने उनके बारे में कहा है, "जो बात आद्योपान्त उनमें एक समान रूप से पिरोयी हुई है, वह है एक ऐसा सहज व्यक्तित्व, जो सिद्धान्तों और वादों के बोझ से दबा नहीं है, पर साथ ही सिद्धान्तों और वादों का जानकार है। सामाजिक मंगल बुद्धि ही उसका प्रकाश भी है, अंकुश भी है, लक्ष्य भी है। मैं साहित्यकार से जिस स्वतन्त्र चिन्तन की आशा करता हूँ, वह उनकी सहज जीवन्त भाषा में मिल रहा है। ये पाण्डित्य के बोझ से भारी नहीं, स्वानुभूति के रसायन से स्वस्थ है। क्या कमाल की सहज धारा है उनमें !"

विशिष्ट ग्रन्थ-सूची

हिन्दी

उपन्यास

जंगल 1969, पृ. 236, 18 से.मी.
धुँआ 1977, पृ. 528, 21.5 से.मी.
नागफनी का देश 1953, पृ. 99, 18 से.मी.
सिन्धी में अनूदित
बीज 1952, पृ. 421, 18 से.मी.
भटियाली 1969, पृ. 103, 18 से.मी.
सुख-दुख 1969, पृ. 144, 18 से.मी.
हाथी के दाँत 1956, पृ. 134, 18 से.मी.
तेलुगु में अनूदित

कहानियाँ

इतिहास 1947, पृ. 180, 18 से.मी.
कटघरे 1954, पृ. 137, 18 से.मी.
क़स्बे का एक दिन 1949, पृ. 144, 18 से.मी.
गीली मिट्टी 1957, पृ. 136, 18 से.मी.
चित्रफलक 1960, पृ. 126, 18 से.मी.
जीवन के पहलू 1946, पृ. 186, 18 से.मी.
भोर से पहले 1953, पृ. 134, 18 से.मी.
सरगम 1977, पृ. 379, 21.5 से.मी.

नाटक

चिन्दियों की एक झालर 1969, पृ. 88, 18 से.मी.
शताब्दी 1971, पृ. 62, 18 से.मी.
हमलोग 1972, पृ. 69, 18 से.मी.
ये तीनों ही नाटक त्रयी के रूप में *आज अभी* शीर्षक से 1973 में प्रकाशित हुए।

जीवनी

प्रेमचन्द : क़लम का सिपाही 1962, पृ. 640, 21.5 से.मी.

हास्य-व्यंग्य

आनन्दम 1977, पृ. 296, 21.5 से.मी.
बतरस 1972, पृ. 131, 18 से.मी.
बायस्कोप 1989, पृ. 136, 18 से.मी.
रम्या 1970, पृ. 108, 18 से.मी.
विज़िट इण्डिया 1982, पृ. 125, 18 से.मी.

यात्रा-वृत्त

सुबह के रंग (चीन-भ्रमण के संस्मरण) 1953, पृ. 186, 18 से.मी.

समालोचना

आधुनिक भावधारा की संज्ञा 1973, पृ. 207, 21.5 से.मी.
नयी समीक्षा 1948, पृ. 368, 21.5 से.मी.
प्रेमचन्द की प्रासंगिकता 1985, पृ. 189, 21.5 से.मी.
विचारधारा और साहित्य 1984, पृ. 134, 21.5 से.मी.
सहचिन्तन 1969, पृ. 229, 21.5 से.मी.

अनुवाद

अग्निदीक्षा (आस्त्रोवस्की कृत *हाउ द स्टील वाज़ टेम्पर्ड*) 1954, पृ. 416, 21.5 से.मी.
आदि विद्रोही (हावर्ड फ़ास्ट कृत *स्पार्टकस*) 1955, पृ. 377, 21.5 से.मी.
ख़ौफ़ की परछाइयाँ (ब्रेख्त कृत *फ़ीयर एण्ड मिज़री इन द थर्ड राइक*) 1952, पृ. 48, 21.5 से.मी.
फाँसी के तख्ते से (जूलियस फूचिक कृत *नोट्स फ्राम द गैलोज़*) 1952, पृ. 112, 21.5 से.मी.
रवीन्द्रनाथ के निबंध द्वितीय खण्ड 1965, पृ. 509, 21.5 से.मी.
शहीदनामा 1989, पृ. 214, 21.5 से.मी.
समरगाथा 197(हावर्ड फास्ट कृत *माई ग्लोरियस ब्रदर्स*)
हैमलेट 1965, पृ. 189, 21.5 से.मी.

अन्य कार्य

प्रेमचन्द की उर्दू और हिन्दी पत्रिकाओं में प्रकाशित सामग्री का उद्धार, जो अभी तक प्रेमचन्द की प्रकाशित हिन्दी कृतियों में शामिल नहीं थीं। इस प्रकार उनकी प्रकाशित सामग्री में 2500 से अधिक पृष्ठ जुड़े, जिनमें 56 कहानियाँ हैं जो गुप्तधन के नाम से दो खण्डों में प्रकाशित हुईं ; चार प्रारम्भिक उपन्यास हैं, जो *मंगलाचरण* नाम से प्रकाशित हुए ; सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विषयों पर लिखी गयीं पत्रकारिता सम्बन्धी सामग्री जो *विविध प्रसंग* नाम से तीन खण्डों में प्रकाशित हुई। *चिट्ठी-पत्री* नाम से उनके पत्रों का प्रकाशन दो खण्डों में हुआ है तथा मारिस मेटरलिंक के एक नाटक का अनुवाद शबे-तार के नाम से प्रकाशित हुआ है।

अंग्रेज़ी

ए हाउस डिवाइडेड (आधुनिक हिन्दी तथा उर्दू का समाज भाषावैज्ञानिक अध्ययन) 1984 पृ. 21.5 से.मी.

रवीन्द्रनाथ के निबंध और *ए हाउस डिवाइडेड* को छोड़कर अन्य सभी पुस्तकें हंस प्रकाशन, इलाहाबाद से प्रकाशित हुई हैं। रवीन्द्रनाथ के निबंध का प्रकाशन साहित्य अकादेमी ने किया है और *ए हाउस डिवाइडेड* का आक्सफ़ोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस ने।

इन्द्रनाथ चौधुरी के साथ

प्रमुख घटनाएँ

1921	जन्म
1936	मैट्रिक उत्तीर्ण, पिता की मृत्यु, प्रथम रचना—एक रेखाचित्र *भारत* में प्रकाशित
1938	इलाहाबाद विश्वविद्यालय में दाख़िला। मार्क्सवादी विचारधारा और कम्युनिस्ट पार्टी से सम्पर्क
1942	अंग्रेज़ी में स्नातकोत्तर उपाधि बनारस वापसी
1943	कम्युनिस्ट पार्टी की सदस्यता ग्रहण, मज़दूर आंदोलन में कार्य, प्रगतिशील लेखक संघ का संगठन, *हंस* का सम्पादन (1942-52)
1945	विवाह
1951	भारत सुरक्षा क़ानून के अन्तर्गत जेल-यात्रा। इस क़ानून के उच्च न्यायालय द्वारा अवैध घोषित किये जाने पर चार माह बाद रिहाई।
1952	विश्व शांति आन्दोलन के लिए कार्य। एशियाई शांति सम्मेलन में भाग लेने के लिए चीन-यात्रा
1957	लेखकों के ऐतिहासिक साहित्यकार सम्मेलन का आयोजन, जिसमें चार पीढ़ियों के लेखकों द्वारा प्रतिनिधित्व, हावर्ड फ़ास्ट के उपन्यास *स्पार्टकस* के हिन्दी अनुवाद के लिए भारत सरकार के वर्ष के श्रेष्ठ अनुवाद पुरस्कार से सम्मानित।
1962	प्रेमचंद की जीवनी *क़लम का सिपाही* का प्रकाशन
1963	*क़लम का सिपाही* के लिए साहित्य अकादेमी पुरस्कार
1965	जर्मनी, बुल्गारिया और सोवियत संघ की यात्रा
1966	अठारह वर्षीय पुत्र की ल्यूकेमिया से मृत्यु
1971	सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार।
1972	रूमानिया, हंगरी, सोवियत संघ, इंग्लैंड, फ्रांस और इटली की यात्रा
1973	साहित्य अकादेमी की सामान्य समिति और कार्यसमिति के सदस्य, नेशनल बुक ट्रस्ट के न्यासी, सोवियत लैण्ड नेहरू पुरस्कार समिति के सदस्य
1977	समाज भाषा वैज्ञानिक शोध योजना पर कार्य के लिए नेहरू फ़ेलोशिप से पुरस्कृत।
1978	लंदन, ब्रुसेल्स, एमस्टर्डम और पेरिस की यात्रा।
1987	उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान द्वारा संस्थान सम्मान
1989	भारतीय अनुवाद परिषद् द्वारा द्विवागीश पुरस्कार से सम्मानित

सुमित्रानन्दन पंत के साथ, 1971

मुद्रक : विमल ऑफसैट